Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR,
MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper I, Indian Philosophy (BA Part I Honours)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 07, Oct.
October 14, 2020

BA Part I Honours

अनुमान प्रमाण के विरुद्ध आपत्तियां तथा उसके निराकरण

स्वतंत्र प्रमाण के रूप में अनुमान के विरुद्ध चार्वाकों के आक्षेप सर्वाधिक प्रखर हैं। चार्वाक मतानुसार प्रत्यक्ष मात्र ही प्रमाण है। प्रत्यक्ष के अतिरिक्त ज्ञान का कोई अन्य साधन स्वीकार योग्य नहीं है। चार्वाक मानव ज्ञान का प्रारंभ, उसकी सीमा और ज्ञान के समस्त मानदंडों को प्रत्यक्ष प्रमाण तक सीमित कर देते हैं। उनका सर्वज्ञात सिद्धांत है कि जो प्रत्यक्षगम्य में नहीं है वह सतारूप स्वीकृति के अयोग्य है। इसी आधार पर चार्वाक समस्त वेद-सिद्ध तत्वों यथा ईश्वर, स्वर्ग, नरक आदि का खंडन करते हैं। साथ ही चार्वाक लोक-व्यवहार के लिए भी अनुमान को अप्रमाणिक घोषित करते हैं।

वस्तुतः चार्वाक के अतिरिक्त भारतीय दर्शन के सभी आस्तिक-नास्तिक दोनों संप्रदायों में तत्वमीमांसीय तथा लोक-व्यवहार सहित समस्त विवेचना के लिए अनुमान कि अपरिहार्य आवश्यकता पर बल दिया गया है। यहाँ कहा गया है कि ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान तक सीमित कर देने से मानव ज्ञान की सीमा संकुचित होती है। यहाँ अनुमान के विपक्ष और पक्ष में चार्वाकों तथा अनुमान प्रमाण के समर्थकों के अपने-अपने सबल तर्क हैं।

अनुमान के समर्थकों के अनुसार व्याप्ति और पक्षता के आधार पर प्राप्त साध्य-विषयक निश्चयात्मज्ञान को अनुमान कहते हैं। चार्वाक व्याप्ति, पक्षता का अनुमान के निश्चयात्मज्ञान एवं ज्ञानात्मक स्वरूप इन तीनों पर आपत्ति करते हुए प्रमाण अनुमान प्रमाण का खंडन करते हैं।

पक्षता के विरुद्ध आक्षेप--

पक्षता या पक्षधर्मता अनुमान का अन्य आधार है। सामान्यतः हेतु युक्त पक्ष को पक्षधर्मता कहा गया है, यथा 'पर्वत पर धूम्र है'। वेदांती श्रीहर्ष और चित्सुखार्चचार्य ने अनुमान के इस द्वितीय आधार पक्षता के विरुद्ध भी आपत्तियाँ प्रस्तुत की है। श्रीहर्ष ने 'पक्षता' पद के विविध अर्थ प्रस्तुत करते हुए यह सिद्ध करने का की चेष्टा की है कि पक्षता पद का कोई भी अर्थ संगत नहीं है। अतः अनुमान के आधार के रूप में पक्षता एक अर्थहीन अवधारणा है तथा इसी के कारण से अनुमान प्रमाण अनूपपन्न रह जाती है।

अनुमिति के निश्चयात्मक स्वरूप पर आक्षेप

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

Lacture No. 07, Oct.
October 14, 2020

चार्वाक के अतिरिक्त समस्त भारतीय दार्शनिक प्रमा या यथार्थ ज्ञान की अनिवार्य उपाधि के रूप में निश्चयात्मकता को स्वीकृति प्रदान करते हैं, जबकि चार्वाक ज्ञान के क्षेत्र में निश्चयात्मकता को बहिष्कृत कर संभाव्यता की स्थापना के प्रति उत्सुक दिखते हैं।

चार्वाक अनुमति की निश्चयात्मकता पर प्रहार करते हुए कहते हैं कि जगत के समस्त कार्यकलाप निश्चयात्मकता की अपेक्षा संभावना को स्वीकार कर संपन्न किए जाते हैं। कृषक संभावना के आधार पर ही कृषि कार्य में प्रवृत्त होता है। कभी-कभी संभावना युक्त ज्ञान को निश्चयात्मक ज्ञान मानकर मनुष्य कार्य-प्रवृत्त होता है। ऐसी दशा में संभाव्यता में ही निश्चयात्मकता का आरोपण होता है।

चार्वाक के मतानुसार अनुमति अर्थात अनुमानजन्य ज्ञान भी कदापि निश्चयात्मक नहीं हो सकती। अनुमान स्थल जैसे पर्वत में धूम को देखकर हमारे मन में पर्वत पर अग्नि की संभावना का उदय होता है, ना की अनिवार्यता का। इसी संभावना को निश्चयात्मक मानकर अनुमान की जो प्रमाणिकता स्वीकार की जाती है वह काकतालीय संभावना सर्वदा सफल प्रवृत्ति का जनक न होने के कारण अप्रमाणिक है।